साहित्य आज तक कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

“साहित्य आज तक” में भाग लेने आए सभी युवा एवं प्रबुद्ध भाइयों एवं बहनों को मेरा नमस्कार। आप सबको मेरी ओर से संविधान दिवस की हार्दिक बधाई।

इंडिया टुडे ग्रुप को इस आयोजन के लिए हार्दिक बधाई। आज इस तीन दिवसीय कार्यक्रम का समापन हो रहा है। तीन दिनों में आपने अपने मनपसंद कलाकारों को, साहित्यकारों को सुना और उनका आनंद लिया। यहाँ उपस्थित विशाल समूह को देखकर ही पता लग रहा है कि यह कार्यक्रम कितना लोकप्रिय हो रहा है।

इंडिया टुडे ग्रुप ने हर वर्ष साहित्य आज तक के आयोजन की जो परंपरा शुरू की है, ये समय के साथ और ज्यादा समृद्ध होती जा रही है। इसके जरिए कला, साहित्य और ज्ञान का विस्तार तो हो ही रहा है, साथ ही नए युवा साहित्यकारों, लेखकों और पत्रकारों को एक मंच भी मिल रहा है।

मुझे बताया गया है कि इस कार्यक्रम के आयोजन का यह छठा संस्करण है। आज जिन साहित्यकारों को सम्मानित किया गया है, वे अपनी कला में अत्यंत माहिर हैं और उन्होंने अपनी प्रतिभा से हम सबका मनोरंजन भी किया है और हमारा ज्ञान भी बढ़ाया है। आप सभी विजेताओं को मैं बहुत बहुत बधाई देता हूँ।

मुझे इस बात की खुशी है कि साहित्य में हमारे नौजवानों का उत्साह बढ़ रहा है। आज भी यहाँ मैं देख रहा हूँ कि हमारे युवा साथियों की कितनी बड़ी भागीदारी है।

मोबाईल और सोशल मीडिया के आने से लोगों की साहित्य में रुचि कम नहीं हुई है, बल्कि इन माध्यमों ने लिखने की कला को एक नया आयाम दिया है, नया फोरम दिया है। आज आप ब्लॉग के माध्यम से, वीडियो ब्लॉग के माध्यम से, सोशल मीडिया पर पोस्ट के माध्यम से अपने टैलेंट को जनता के सामने प्रस्तुत करते हैं।

कहते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। हमारे समाज के अंदर जो कुछ हो रहा होता है और जो कुछ होना चाहिए, वह साहित्य के माध्यम से सामने आता है। पास्ट और फ्यूचर की सभी बातें साहित्य के माध्यम से सामने आती हैं। इसलिए समाज के निर्माण में, विकास में साहित्य की भूमिका सबसे ज्यादा है। अच्छा साहित्य वही है जिसमें समाज के लिए रचनात्मक संदेश हो।

आप विश्व का इतिहास निकाल लीजिए, देश और दुनिया में कोई भी बड़ी क्रांति हुई है, कोई भी बड़ा घटनाक्रम हुआ है; साहित्य की उसमें बड़ी भूमिका रही है। हमारी आजादी के संघर्ष में भी साहित्य का और साहित्यकारों का बड़ा योगदान रहा है। हमारे कवियों ने, कथाकारों ने, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक जो भी विषय हों, उस पर व्यापक रूप से लिखा है और उन विषयों पर पब्लिक ओपीनियन बनाया है।

हमारे पत्रकार बंधु भी एक प्रकार से साहित्यकार ही हैं। आप समाज में बदलाव लाने के लिए सबसे ज्यादा मेहनत करते हैं। मीडिया का नेटवर्क सभी शहरों और गांवों में फैला हुआ है। आप देश के कोने कोने में जाकर रिपोर्टिंग करते हैं। इसीलिए आप एक यूनिक पोजिशन में हैं कि आप सभी विषयों पर लोगों को सही जानकारी दें।

आपके ऊपर ज्यादा जिम्मेदारी है कि आप जनता और सरकार के बीच एक कड़ी का काम करें। पत्रकारिता की ताकत को आम लोगों की बेहतरी के लिए इस्तेमाल करें।

साहित्य को आप किसी खास काल खंड में बांधकर नहीं रख सकते। साहित्य अतीत से प्रेरणा लेता है, वर्तमान को चित्रित करने का कार्य करता है और भविष्य का मार्गदर्शन करता है।

अगर साहित्य अच्छा है तो हर काल खंड में उसे पसंद किया जाएगा। यही कारण है कि आज भी कालिदास, वाल्मीकि, सूर, कबीर, तुलसी, रहीम द्वारा रचित साहित्य लोगों के बीच लोकप्रिय है, उनके लिए प्रेरणा का स्रोत है। हमारी इस अमूल्य धरोहर को संजोकर रखने एवं उसे जनता के बीच पहुँचाने का काम मीडिया ने किया है।

वर्तमान मीडिया के माध्यमों का एक लाभ यह भी हुआ है कि एक नए लेखक वर्ग का उदय हुआ है, जो साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी रचनाओं का निर्माण कर रहे हैं।

साहित्यकार ऐसे साहित्य की भी रचना करें, जिससे नागरिक अपने अधिकार, कर्तव्य, न्यायिक व्यवस्था, राजनीतिक स्थिति से परिचित हो सके और राजनीति के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो सके। इससे हमारा लोकतंत्र और अधिक सशक्त एवं समृद्ध हो।

आज संविधान दिवस है। मैं यहाँ पर यहाँ उपस्थित आप सभी जनों से यह आग्रह करता हूँ कि हम अपने संविधान, देश के लोकतंत्र, संसदीय व्यवस्था के बारे में पढ़ें, समझें। कानूनों का निर्माण, और उसके पीछे संसद की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है; इसकी जानकारी देश के नौजवानों को हो।

हमारे नौजवान संविधान सभा की बैठकों में क्या चर्चाएं हुई थी, कैसे डिबेटस होते थे; उसे जानें, उसे पढ़ें। हमारी संविधान सभा में जो चर्चा हुई थी, आज ऑनलाइन भी उपलब्ध है।

आज युवाओं का दायित्व है कि साहित्य से अपने जुड़ाव को बनाए रखें। साहित्य से समाज के बारे में तो जाने ही, इसी के साथ हमारे राष्ट्रीय गौरव, हमारे राष्ट्रीय नायकों के बारे में भी जाने।

पिछले ही वर्ष भारत की स्वाधीनता को 75 वर्ष पूर्ण हुए हैं। हमारे देश की आजादी के आंदोलन में में कितने ही ऐसे लोग थे, जिन्होंने अपना बलिदान दे दिया, लेकिन अधिकतर देशवासी उनके बारे में जानते तक नहीं। उनके संघर्ष , उनके योगदान को सामने लाने की आवश्यकता है।

चाहे कोई भी समय रहा हो, साहित्य ने सदा समाज को और अधिक उन्नत किया है, आगे बढ़ाया है। स्वतंत्रता के संघर्ष से लेकर, सामाजिक जागरूकता तक साहित्य की अनमोल भूमिका रही है।

मैं एक बार फिर से इंडिया टुडे ग्रुप और 'आजतक' की पूरी टीम को बधाई देता हूँ कि आप के प्रयासों से इस कार्यक्रम के द्वारा आज के युवाओं को साहित्य और संस्कृति की दुनिया से सीधे जुड़ने का मौका मिल रहा है। आप सबको पुनः मेरी शुभकामनाएं।